Domariaganj, Basti, Kasia, Piprakothi, Muzaffarpur, Barauni, Purnia, Araria, Thakurganj, Chalsa, Hashimara, Bhalka Sankosh, Kachugaon, Sidli, Amingaon route is almost complete and traffic have been using it for the past several years.

ज्वार (टाइडल) बिजलीघर

5773. श्री राम नरेश कुशवाहा: क्या ऊर्जा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में स्थित ज्वार बिजलीघरों के नाम क्या हैं तथा उनको चालू करने की तिथियां क्या हैं;

(ख) उनसे कितनी बिजली पैदा की जाती है तथा इसका उपयोग किन कामों के लिये किया जाता है;

(ग) उनका और विकास करने के लिये क्या कदम उठाये जा रहे हैं; और

(घ) क्या इसका उपयोग तटीय क्षेत्रों के अतिरिक्त मैदानी क्षेत्रों में भी किया जा सकता है?

ऊर्जा मंत्री (श्री पी० रामचन्द्रन) : (क) देश में इस समय कोई ज्वार विद्युत् केन्द्र प्रचलन में नहीं है।

(ख) प्रश्न नहीं उठता।

(ग) तीन ऐसे स्थान हैं, अर्थात् गुजरात में कच्छ की खाड़ी और खम्भात की खाड़ी तथा पश्चिम बंगाल में सुन्दरबन क्षेत्र, जहां ज्वार की तरंगें काफी ऊंची होती हैं और ज्वार विद्युत् उत्पादन के लिए उपयोग में लाई जा सकती हैं। जो प्रारंभिक अध्ययन तथा अन्वेषण किये गये हैं उनसे पता चलता है कि कच्छ और खम्भात की खाड़ियों में बृहत् ज्वार विद्युत् क्षमता उपलब्ध है तथा सुन्दरबन क्षेत्र में छोटे पैमाने पर ज्वार विद्युत् का विकास करने की संभावनाएं हैं। दिन में दो बार चन्द्रमा के घटने-बढ़ने से ज्वार की तरंगें घटती-बढ़ती रहती हैं और परिणामस्वरूप ज्वारीय स्कीमों से विद्युत् उत्पादन घटता बढ़ता है। इसको विद्युत् प्रणालियों में शामिल करने के लिए, विद्युत् के अन्य स्रोतों से प्रतिपूरक प्रचालन करके इसे सुस्थिर करना आवश्यक है। ज्वार विद्युत् विकास के लिए, कठिन परिस्थितियों में, बृहत् सिविल निर्माण कार्य करना भी आवश्यक है। ज्वार विद्युत् विकास की प्रारंभिक लागत भी बहुत अधिक होती है। यह महसूस किया गया है कि खम्भात और कच्छ की खाड़ियों में विकास की इष्टतम क्षमता इतनी अधिक होगी कि इससे होने वाले घटते-बढ़ते उत्पादन को पूर्वानुमानित भविष्य में गुजरात/पश्चिमी क्षेत्रीय ग्रिड में खपाना कठिन होगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए, कच्छ की खाड़ी में एक छोटी स्कीम विकसित करने की संभावना पर विचार किया गया है। इस प्रकार की छोटी ज्वारीय स्कीम में उत्पन्न होने वाली विद्युत् को खपाना भी एक समस्या पैदा करेगी। विकास की स्कीम तैयार करने तथा इसकी तकनीकी व्यवहार्यता और आर्थिक औचित्य सुनिश्चित करने के लिए आगे विस्तृत अध्ययन अपेक्षित हैं। सुन्दरबन क्षेत्र में जिन संभावनाओं का पता चला है उससे सिर्फ थोड़े से उत्पादन (1.5 से 2 मेगावाट) का विकास किया जा सकेगा और उनसे उत्पन्न की गई बिजली अपेक्षाकृत महंगी होगी। इनके घटते-बढ़ते उत्पादन को सुस्थिर करना भी कठिन होगा।

(घ) ज्वार विद्युत् विकास के उत्पन्न विद्युत को मैदानों सहित कहीं भी उपयोग में लाने के लिए राज्य/क्षेत्रीय ग्रिडों में पहुंचाया जा सकता है।

Fall in production of Wagons

5774. SHRI M. RAM GOPAL REDDY: Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state whether it is a fact that production of wagons in the country has gone down?